IIAG ज्योतिष संस्थान

(AN INFINITE WORLD OF ASTROLOGY AND VASTU)

ज्योतिष एवं वास्तु पाठ्यक्रम

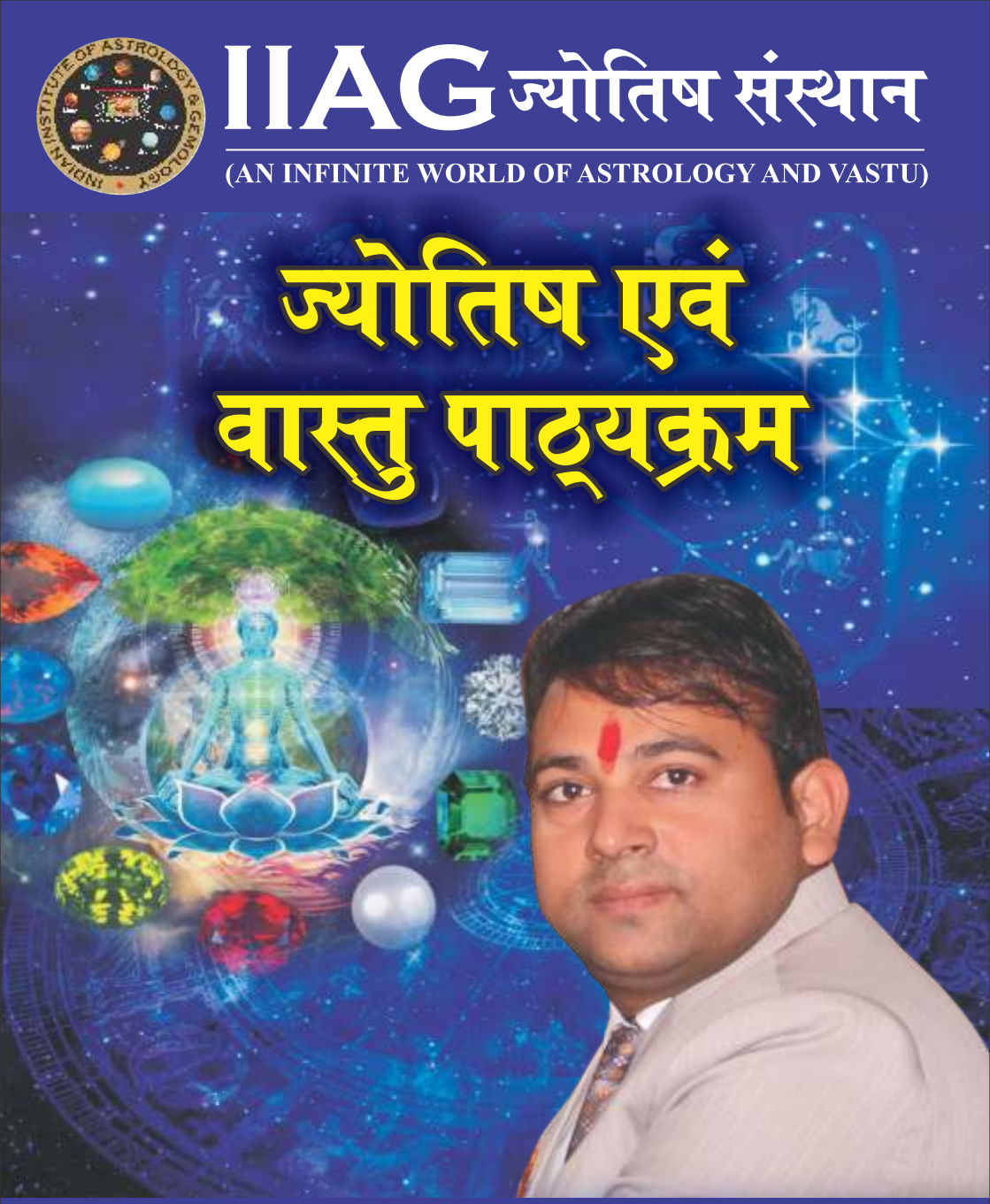

Dr. Yagya Dutt Sharma

MCA, Ph.d.

ज्योतिष व वास्तु विशेषज्ञ Astro & Vastu Consultant

IIAG ज्योतिष संस्थान

हर घर में होगा ज्योतिष व वास्तु का ज्ञान।
विश्वसनीयता का दूसरा नाम IIAG ज्योतिष संस्थान।।

IIAG ज्योतिष प्रशिक्षण संस्थान भारत के फरीदाबाद में स्थित ज्योतिष और वास्तु शास्त्र में दृढ़ विश्वास रखने वाले लोगों के लिए सर्वोत्तम ज्योतिष और वास्तु प्रशिक्षण सेवाएं प्रदान करने में लगा हुआ है। हमारा संस्थान एक ऐसा स्थान है जहां कोई भी ज्योतिष, कुंडली बनाने, मिलान बनाने, आदि व वास्तु शास्त्र, 8 दिशा, 16 जोन, 32 गेट और 45 देवता में सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षण और उन्हें कैसे संतुलित किया जाए, जैसे पाठ्यक्रमों का लाभ उठा सकता है।

हमारा संस्थान शिक्षार्थियों के लिए ये सभी ज्योतिष और वास्तु पाठ्यक्रम किफायती शुल्क पर प्रदान करता है। हमने हर कोर्स के लिए कुशल और अनुभवी ज्योतिष व वास्तु पेशेवरों को नियुक्त किया है। वे ज्योतिष और वास्तु शास्त्र की हर अवधारणा का पता लगाने के लिए छात्रों और शिक्षार्थियों को उचित प्रशिक्षण और सहायता देते हैं। हमारे विशेषज्ञ एस्ट्रो और वास्तु विज्ञान के माध्यम से शिक्षार्थियों को व्यक्तिगत, व्यावसायिक, शारीरिक, धन, प्रेम, विवाह और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य मुद्दों को सुलझाने के लिए प्रशिक्षित करते हैं।

हम उन लोगों के लिए सर्वश्रेष्ठ वास्तु विशेषज्ञ प्रशिक्षण और सलाहकार सेवाएं प्रदान करते हैं जो वास्तु शास्त्र सीखना चाहते हैं, एक ऐसा विज्ञान जिसे हिंदू पौराणिक कथाओं में ''निर्माण का विज्ञान'' कहा जाता है। मूल रूप से, वास्तु पृथ्वी, जल, वायु, अंतरिक्ष और अग्नि जैसे पांच तत्वों पर आधारित हैं।

इसके अलावा, हम वास्तु आवासीय, वास्तु वाणिज्यिक, वास्तु उपचार, स्कूल के लिए वास्तु, मॉल, दुकानों और कई अन्य बेहतरीन वास्तु सेवाएं भी प्रदान करते

हैं। हमारे सभी पाठ्यक्रम और सेवाएं ज्योतिष और वास्तु विज्ञान के वास्तविक तथ्यों पर आधारित हैं। संस्थान का मुख्य उद्देश्य ज्योतिष और वास्तु के क्षेत्र में फैली भ्रांतियों को दूर करना है। ज्योतिष व वास्तु के सभी पहलुओं पर अधिकार प्राप्त करने के बाद, आप अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने या इस क्षेत्र में एक पेशेवर के रूप में काम करने में सक्षम होंगे।

संस्थान द्वारा ऑनलाइन और ऑफलाइन कोर्स के लिए एडवांस वीडियो तैयार किए गए हैं। संस्थान में प्रवेश लेने वाले छात्र और शोधकर्ता को ये वीडियो कक्षाओं की शुरुआत में ही उपलब्ध कराए जाते हैं। ये सभी वीडियो कोर्स बुक के सब्जेक्ट के हिसाब से बनाए गए हैं। इसे देखने से आप ज्योतिष और वास्तु के क्षेत्र में अपना लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

नोटः– संस्थान द्वारा दिये गये सभी प्रमाण पत्र सरकार के नियमानुसार मान्यता प्राप्त एनजीओ द्वारा दिए जाएंगे।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मैं श्री गुरुवे नमः।।

मैं अपने परम पूज्यनीय गुरु जी को सादर नमन करता हूँ।
इंजीनियर श्री रवीन्द्र नाथ चतुर्वेदी जी

मुझे गुरु जी द्वारा जो ज्योतिष, आध्यात्म व योग का ज्ञान मिला, जिसे प्राप्त करने के बाद मैं जीवन व ज्योतिष की बारिकियों को समझ पाया जिसके लिए मैं दिल से आभार प्रकट करता हूँ।

हमारी सबसे बड़ी सामर्थ्य और शक्ति हैं हमारे पूज्य दादा जी 'इंजीनियर श्री रवींद्र नाथ चतुर्वेदी जी', जिन्होनें उत्तर भारत में सबसे पहले कृष्णामूर्ति पद्धति ज्योतिष पर आधारित 'नक्षत्रीय ज्योतिष अनुसंधान केंद्र' वर्ष 1965 में स्थापित किया।

साठ के दशक में उन्होंने गुरुजी श्री के.एस.के जी व उनकी पद्धति के बारें में सुना और पढ़ा तो यह उनके अनुयायी हो गए। दादा जी सिंचाई विभाग में इंजीनियर रहे और पिछले कई सालों में हजारों महिलाओं, वैज्ञानिकों, वकीलों, अशिक्षितों, अधिकारियों, धार्मिक गुरुओं आदि को के.पी. (कृष्णामूर्ति पद्धति) पद्धति सिखा चुके है।

मैं डॉ0 यज्ञदत्त शर्मा, दादा जी द्वारा जो ज्ञान मुझे मिला, उसके बाद मेरा जीवन ही बदल गया, तथा मेरे जीवन का एक मात्र लक्ष्य ज्योतिष विज्ञान बन गया।

मैंने अपने द्वारा शोध व अध्ययन मे यह पाया है कि ज्योतिष विज्ञान को अगर सही तरीके से समझा जाये तो व्यक्ति अपने जीवन का सही आंकलन व मार्गदर्शन कर सकता है।

ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि जो ज्ञान मुझे मेरे गुरुजी द्वारा मिला है, मैं उसे आगे इस समाज को दें सकूँ।

धन्यवाद!

हमारा लक्ष्य और उद्देश्य

आज के प्रतिस्पर्धा के युग में प्रगति की धारा से जुड़ने के लिए ज्योतिष एक उत्तम साधन है। मानव जाति यदि इसका शास्त्रीय और वैज्ञानिक ढंग से सदुपयोग करे तो आगामी अनिष्ट और बाधाओं की निवृत्ति और अपनी ऊर्जा को ज्योतिष के माध्यम से दिशा देकर अपने लक्ष्य को समयानुसार हासिल कर सकता है।

IIAG ज्योतिष संस्थान भारतीय ज्योतिष और कृष्णामूर्ति पद्वति के माध्यम से जातक के जन्म समय को शोध कर दिशा देने और सुधारने में काम कर रहा है।

संस्थान का मूल उद्देश्य है कि:

ज्योतिष के क्षेत्र में जो सन्देह और अंधविश्वास जन–साधारण में पैदा हो गया है। उसकी निवृति और संस्थान के माध्यम से गुरु परम्परागत शिक्षा देकर विधिवत ढंग से समाज के लिए ज्योतिष मनीषी तैयार करना जो समाज को अपनी ऊर्जा से ऊर्जावान और सार्म्थ्यवान बना पाए।

ज्योतिष की उच्चतम शिक्षा प्रदान करना तथा मानव कल्याण के लिए ज्योतिष अध्ययन को बढ़ावा देना।

ज्योतिष विज्ञान को कम्प्यूटर सॉटवेयर के माध्यम से उच्च स्तर प्रदान करना।

हमारे संस्थान का प्रमुख उद्देश्य है कि व्यक्ति के जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक व वैदिक रुप से किया जा सके।

धन्यवाद!

IIAG

ज्योतिष व वास्तु कोर्सेस

उपलब्ध पाठ्यक्रम

भारतीय ज्योतिष (Indian Astrology)

कोर्स की अवधि	(3–4 महीने)
कक्षाओं की संख्या	30 से 35 लगभग
कोर्स शुल्क	21000/–
कक्षाओं का तरीका	ऑनलाइन/ऑफलाइन
कक्षा शिफ्ट	शाम
पेन ड्राइव कोर्स शुल्क	5,500/– (वीडियो कोर्स)

एडवांस व एक्सक्लूसिव के.पी. (कृष्णामूर्ति पद्धति)

कोर्स की अवधि	(5–6 महीने)
कक्षाओं की संख्या	50 से 55 लगभग
कोर्स शुल्क	31000/–
कक्षाओं का तरीका	ऑनलाइन/ऑफलाइन
कक्षा शिफ्ट	शाम
पेन ड्राइव कोर्स शुल्क	16,000/– (वीडियो कोर्स)

वैदिक व एडवांस वास्तु (Vedic & Advance Vastu)

कोर्स की अवधि	(3–4 महीने)
कक्षाओं की संख्या	30 से 35 लगभग
कोर्स शुल्क	21000/–
कक्षाओं का तरीका	ऑनलाइन/ऑफलाइन
कक्षा शिफ्ट	शाम
पेन ड्राइव कोर्स शुल्क	8,000/– (वीडियो कोर्स)

ज्योतिषी–वास्तु (Astro-Vastu)

कोर्स की अवधि	(3–4 महीने)
कक्षाओं की संख्या	30 से 35 लगभग
कोर्स शुल्क	16,000/–
कक्षाओं का तरीका	ऑनलाइन/ऑफलाइन
कक्षा शिफ्ट	शाम
पेन ड्राइव कोर्स शुल्क	8,000/– (वीडियो कोर्स)

भारतीय ज्योतिष

भारतीय ज्योतिष (Indian Astrology/Hindu Astrology) ग्रह एवं नक्षत्रों की गणना की वह पद्धति है जिसका भारत में विकास हुआ है।

यह एक ऐसा विज्ञान या शास्त्र है जो आकाश मंडल में विचरने वाले ग्रहों जैसे सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध के साथ राशियों एवं नक्षत्रों का अध्ययन करता है और इन आकाशीय तत्वों से पृथ्वी एवं पृथ्वी पर रहने वाले लोग किस प्रकार प्रभावित होते हैं उनका विश्लेषण करता है।

आजकल भी भारत में इसी पद्धति से पंचांग बनते हैं, जिनके आधार पर देश भर में धार्मिक कार्य तथा पर्व मनाए जाते हैं।

प्राचीन भारत में ज्योतिष का अर्थ ग्रहों और नक्षत्रों की चाल का अध्ययन करने के लिए था, यानि ब्रह्माण्ड के बारे में अध्ययन। कालान्तर में फलित ज्योतिष के समावेश के चलते ज्योतिष शब्द के मायने बदल गए और अब इसे लोगों का भाग्य देखने वाली विद्या समझा जाता है।

भारतीय ज्योतिष

- प्राथमिक ज्ञान
- ग्रहों की जानकारी
- नक्षत्रों की संपूर्ण जानकारी
- यूनिवर्सल टेबल (Universal Table)
- राशियों की जानकारी
- बारह भावों का ज्ञान
- लग्न निकालना
- लग्न की विशेषताएँ
- षोडश वर्ग
- दशा फल
- अष्टकवर्ग
- भारतीय ज्योतिष के अनुसार फलित ज्ञान
- योग विचार
- गोचर (Transit)
- मांगलिक दोष
- शनि की ढैय्या व साढ़ेसाती
- रत्न विचार
- कालसर्प दोष
- उपचार (Remedies)

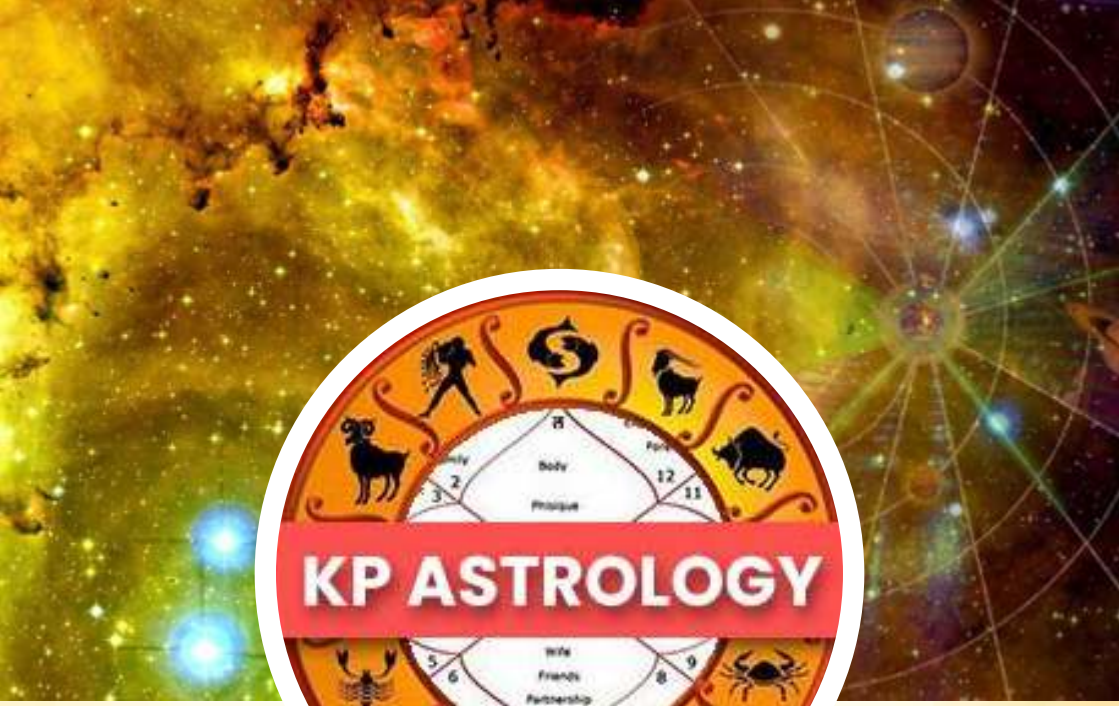

कृष्णामूर्ति पद्धति

कृष्णामूर्ति पद्धति (Krishnamurti Paddhati) में किसी भी घटना को जानने के लिये एक ही सामान्य नियम का प्रयोग किया जाता है, जिसमें घटना से संबन्धित प्रमुख भाव का उपनक्षत्र स्वामी उस भाव की घटनाओं का कारक होता है।

इन घटनाओं से संबन्धित प्रश्नों के उतर जानने के लिये उपनक्षत्र व कार्येश का ही विश्लेषण किया जाता है।

के.पी (कृष्णामूर्ति पद्धति)

- कृष्णामूर्ति पद्धति के जनक
- नक्षत्रो का विभाजन
- कृष्णामूर्ति पद्धति द्वारा कुंडली निर्माण
- कृष्णामूर्ति पद्धति मे निरयन भाव चलित का महत्व
- उपनक्षत्र का महत्व
- कृष्णामूर्ति पद्धति सिद्धान्त फलादेश
- शासक ग्रह (Ruling Planet)
- प्रश्न कुंडली
- दशा व अंतर्दशा का फलित ज्ञान
- दशा भुक्ति व गोचर के अनुसार फलित ज्ञान
- Aspect (दृष्टियाँ) को किस प्रकार देखें?
- कुंडली मे जन्म समय का ज्ञान
- भावो के अनुसार फलादेश की विधि
- (K.P.-1 to 12 Topics)
- द्वादश भावो के उप नक्षत्रो द्वारा फलित
- कारक ग्रह (Short Rules)

एडवांस व एक्सक्लूसिव के.पी. (कृष्णामूर्ति पद्धति)

- ग्रहों की जानकारी
- राशियों की जानकारी
- भावों की जानकारी
- नक्षत्रों की जानकारी
- कृष्णमूर्ति पद्धति के 5 महत्वपूर्ण टूल
- वक्री ग्रह
- रुलिंग प्लेनेट (शासक ग्रह)
- उपनक्षत्र का महत्त्व
- कृष्णमूर्ति पद्धति सिद्धान्त फलादेश
- प्रश्न कुंडली
- आयु
- स्वास्थ्य
- धन स्थिति
- तीसरे भाव से संबन्धित प्रश्न
- शिक्षा
- संतान
- नौकरी
- प्रॉफेशन
- विवाह
- दुर्घटना
- भाग्य भाव
- इच्छापूर्ति देखना
- विदेश से संबन्धित प्रश्नों के उत्तर
- दशा की किस प्रकार पढे।
- पहलू (Aspects)
- कुछ सामान्य बिंदु (Some General Points)
- लघु नियम (Short Rules)
- के.पी महत्वकांक्षी (KP Significators)
- जन्म समय सुधार (Birth Time Rectification)

वैदिक व एडवांस वास्तु शास्त्र

संस्कृत में कहा गया है कि...

गृहस्थस्य क्रियास्सर्वा न सिद्धयन्ति गृहं विना।

वास्तु शास्त्र घर, प्रासाद, भवन अथवा मन्दिर निर्माण करने का प्राचीन भारतीय विज्ञान है, जिसे आधुनिक समय के विज्ञान आर्किटेक्चर का प्राचीन स्वरुप माना जा सकता है।

जीवन में जिन वस्तुओं का हमारे दैनिक जीवन में उपयोग होता है उन वस्तुओं को किस प्रकार से रखा जाए, वह भी वास्तु है।

वस्तु शब्द से वास्तु का निर्माण हुआ है।

दिशाओं के ज्ञान को ही वास्तु कहते हैं।

यह एक ऐसी पद्धति का नाम है, जिसमें दिशाओं को ध्यान में रखकर भवन निर्माण व उसका इंटीरियर डेकोरेशन किया जाता है।

ऐसा माना जाता है कि वास्तु के अनुसार भवन निर्माण करने पर घर–परिवार में सुख–समृद्धि व खुशहाली आती है।

वास्तु में दिशाओं का बड़ा महत्व है।

वैदिक व एडवांस वास्तु

- क्या है वास्तु
- वास्तु शास्त्र में पंचमहाभूत
- वास्तु शास्त्र में दिशाओं का महत्त्व
- कोणों के कटान और विस्तार / ब्रह्म–स्थान
- वास्तु चक्र में उपस्थित 45 देवी–देवता
- नींव स्थापना
- वास्तु के अनुसार आवासीय भवन में कक्षों का निर्माण
- गृहप्रवेश का मुहूर्त
- वास्तु पूजन
- वास्तु दोष निवारण के सरल उपाय

आधुनिक युग के अनुसार वास्तु

- 16 दिशाओं में घरेलु सामान का परिणाम (एडवांस वास्तु)
- 45 देवी–देवताओं का वर्णन
- कहाँ हो आपके घर का द्वार
- वास्तु के अनुसार जोन को बैलेंस करना
- एप्लाइड वास्तु प्रैक्टिकल

ज्योतिषी-वास्तु (Astro-Vastu)

वास्तु शास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र दोनों एक दूसरे से संबंधित है। दोनों को एक दूसरे का पूरक भी कहा जा सकता है। वास्तु विद्या ज्योतिष विद्या का एक भाग है। ज्योतिष विद्या और वास्तु विद्या दोनों का ही उद्देश्य मानव जीवन को सुखमय बनाना है। वास्तु शास्त्र के द्वारा वातावरण में उपस्थित ऊर्जा को संतुलित रुप में प्राप्त कर, जीवन में उन्नति, सफलता और अधिक से अधिक सकारात्मक ऊर्जा शक्ति प्राप्त करना है।

बिना ज्योतिष ज्ञान के वास्तु शास्त्र अधूरा है। एक अच्छे वास्तु शास्त्री को कदम–कदम पर ज्योतिष की जरूरत महसूस होती है। वास्तु शास्त्र में प्रत्येक दिशा को एक ग्रह से जोड़ा गया है। प्रत्येक ग्रह के गुण, धर्म व स्वभाव का ज्ञान जरूरी हो जाता है। एक जैसे दो मकानों में रहने वाले दो परिवारों में अलग–अलग समस्याएँ व परस्पर विरोधी फल मिलने के कारणों का विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि उनके गृह प्रवेश मुहूर्त व जन्मपत्रियों में भिन्नता है।

Astro-Vastu

- एस्ट्रो–वास्तु में ग्रह
- एस्ट्रो–वास्तु में ग्रहों का विवरण
- एस्ट्रो–वास्तु में राशियों का विवरण
- लग्न स्पष्ट एंव निरयन भाव चलित
- हिट की मूल विधि (पहलू सिद्धांत)
- एस्ट्रो–वास्तु में पहलू
  - ग्रह से ग्रह
  - ग्रह से भाव व भाव स्वामी
  - भाव स्वामी से भाव स्वामी
- हिट थ्योरी को कैसे संतुलित करें
- के.पी के भविष्य कहने वाला नियम
- एस्ट्रो–वास्तु में हर समस्या का मूल कारण

- के.पी. एस्ट्रो–वास्तु के कुछ महत्वपूर्ण नियम
- के.पी. एस्ट्रो–वास्तु में खराब भावों की ऊर्जा का उपयोग
- के.पी एस्ट्रो–वास्तु को कैसे लागू करें– उदाहरण के साथ
- एस्ट्रो–वास्तु में अशुभ और शुभ दिशा का चुनाव कैसे करें?
- सामान किस दिशा में अच्छा या बुरा होता है– के.पी एस्ट्रो–वास्तु
- 45 ऊर्जा क्षेत्र
- आपके घर में जियोपैथी का तनाव
- प्रश्नकुंडली
- गोचर (Transit) कैसे काम करता है
- चिकित्सा ज्योतिष
- चक्र और ऊर्जा क्षेत्र
- उपचार
- लाल किताब

उपाय विचार

- उपाय विचार
- ग्रहो के अनुसार उपाय
- विषयो के अनुसार उपाय
- टोटको के द्वारा
- कालसर्प दोष
- मांगलिक विचार
- रुद्राक्ष प्रकरण
- रत्न –उपरत्न
- मंत्र रहस्य
- स्त्रोतों के द्वारा
- पूजनीय दुर्लभ वस्तुओ के द्वारा
- व्रत के नियम विधान व महत्व
- नवग्रहों की स्नान औषधि

रत्न विज्ञान

- रत्नों की उत्पति कब और कैसे?
- रत्न व उपरत्न
- नवग्रहों के रत्न–उपरत्न
- मानव पर ग्रहण एवं रत्नों का प्रभाव
- कुछ दैवीय शक्ति से युक्त रत्न
- कौन सा रत्न पहने और कब
- सिद्धांत व लग्न के अनुसार रत्न चयन
- रत्न धारण करने की विधि और रत्नों की आय

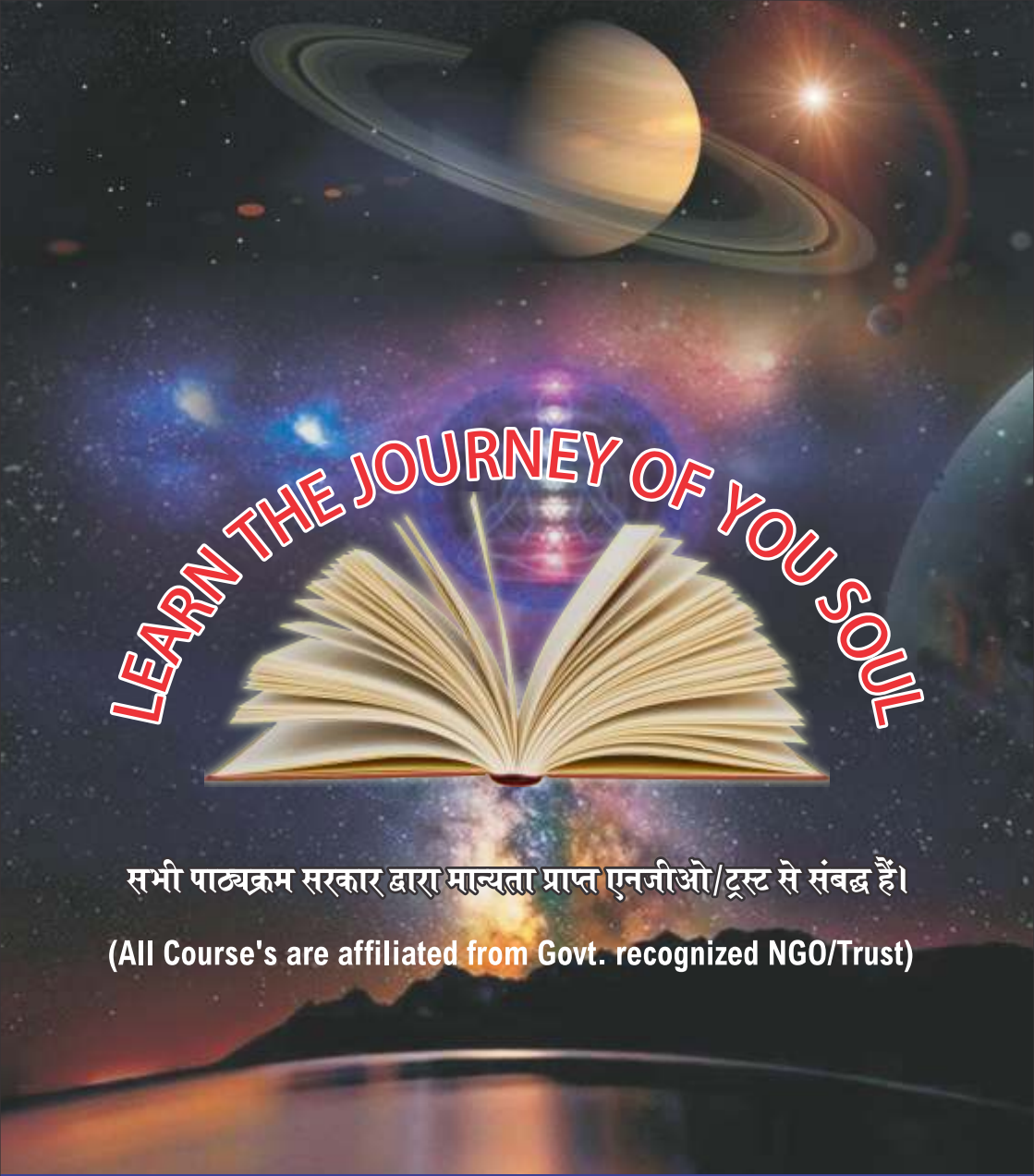

सभी पाठ्यक्रम सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एनजीओ/ट्रस्ट से संबद्ध हैं।

(All Course's are affiliated from Govt. recognized NGO/Trust)

IIAG ज्योतिष संस्थान

(AN INFINITE WORLD OF ASTROLOGY AND VASTU)

Office : H-142 DLF, Sector-10, (9-10 Dividing Road), Faridabad
Email : astroguru22@gmail.com | Web : www.iiag.co.in
Contact : + 91 9873850800, 8800850853